مـــــدرســتــنـــا الــثـــانـــويـــة الإنـجــلــيــزيــة، الـشـارقــة

OUR OWN ENGLISH HIGH SCHOOL, SHARJAH
GIRLS'

EDUCATION

CURRICULUM FOR HINDI AS A SECOND LANGUAGE PRIMARY SCHOOL

VISION

भाषा

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिये हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं।

A language is a structured system of communication. Languages are the primary means of communication of humans, and can be conveyed through speech, sign, or writing.

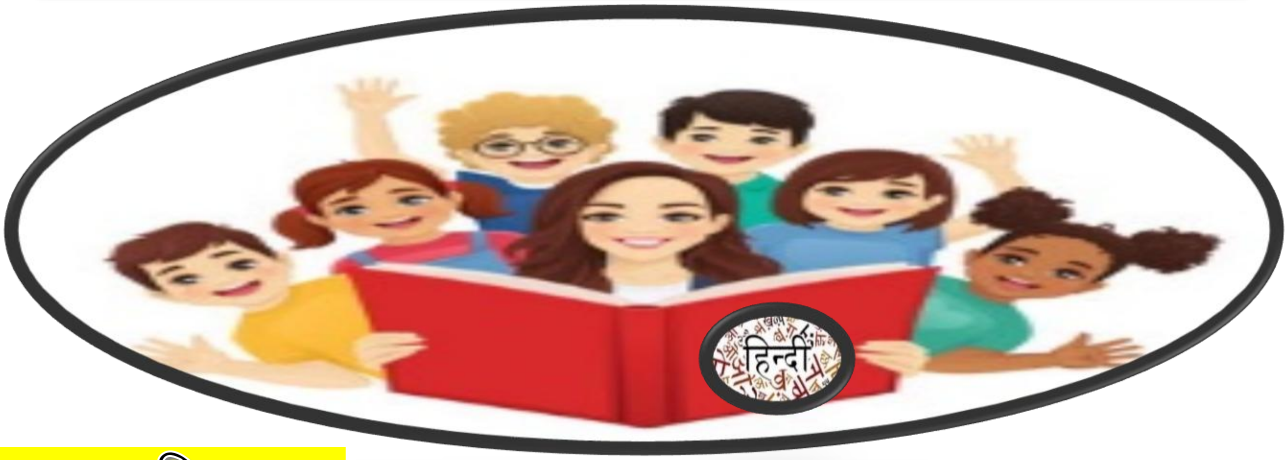

अनुक्रमणिका –

- प्रस्तावना
- उद्देश्य
- पाठ्य–सामग्री
- शिक्षण युक्तियाँ
- परीक्षामूल्यांकन

प्राथमिक कक्षा स्तर

ज्ञान का विस्तार

भाषा एक औजार है जिसका इस्तेमाल हम ज़िंदगी को समझने के लिए, उससे जुड़ने के लिए और जीवन–जगत को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। यह सब करने के लिए जाँच–पड़ताल, तर्क, संप्रेषण जैसे कौशलों की जरूरत होती है। इसके साथ–साथ भाषा यानी बहुभाषिकता हमारी पहचान भी है और हमारी सभ्यता व सस्कृति का अभिन्न अंग भी। इसलिए यह आवश्यक है कि हिंदी सीखने– सिखाने का दायरा इतना व्यापक हो कि भाषा के इन उपयोगों से उसका नाता न टूटे। इससे आगे बढ़ें तो हम पाएँगे कि भाषा हमें अपने परिवेश में कई रूपों में बिखरी मिलती है, जैसे– अखबार, साइनबोर्ड, पोस्टर, विज्ञापन आदि। इसके अतिरिक्त भाषा अपने साहित्यिक रूप में भी उपलब्ध होती है। ऐसे में हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि स्कूल के दस–बारह वर्षों के दौरान विद्यार्थियों में हिंदी के व्यापक और विविध स्वरूप की गहरी समझ विकसित हो जाए। इस स्तर पर हिंदीतर मातृभाषा वाले छात्रों को हिंदी के रूप में एक ऐसा साथी मिलना चाहिए जो उनके अपने सांस्कृतिक परिवेश के साथ सहज संबंध बनाते हुए उनके भीतर अपरिचित के प्रति स्नेह पूर्ण उपस्थिति पैदा कर सके ।

प्रस्तावना

स्कूली शिक्षा पूरी होने तक विद्यार्थी का भाषा–बोध और साहित्य–बोध इस सीमा तक विकसित हो जाए कि उसमें किसी रचना के बारे में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास पैदा हो सके। वह पाठ्यपुस्तकों की परिधि के बाहर भी किसी रचना से जुड़कर उस पर भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सके। वह तरह–तरह के औपचारिक व अनौपचारिक विषय क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा के रूपों से परिचित हो और उसका प्रयोग कर सके। वह संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार विभिन्न किस्म की शैलियों से परिचित हो सके। विद्यार्थियों को भाषा की ताकत का अहसास हो। वह इस बात को समझे कि भाषा के माध्यम से हम केवल संप्रेषण ही नहीं करते, बल्कि जो हम सोचते और महसूस करते हैं उसे सुंदर, प्रभावशाली व्यंजनात्मक और पैने ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है। विद्यार्थी हिंदी की बारीकी और सुंदरता को परख सके। उसे यह ज्ञान हो कि हिंदी के माध्यम से यथार्थ और काल्पनिक दुनिया की रचना की जा सकती है। भाषा के माध्यम से विद्यार्थी का

ज्ञानक्षेत्र इतना विस्तृत हो कि वह राष्ट्रीय समाचारपत्रों और पत्रिकाओं की परिधि में आने वाले व्यक्ति, परिवेश और समाज से जुड़े मुद्दों की सामान्य जानकारी रख सके।

उद्देश्य

दस–बारह वर्ष तक स्कूल में हिंदी पढ़ने के बाद हिंदी पर विद्यार्थियों पर टिप्पणी कर पाएँ। वे आवश्यकता और उद्देश्यों के अनुसार किसी किताब, लेख आदि में से उपयुक्त सामग्री इकट्ठा करके उसका सटीक उपयोग कर सकें। वे रेडियो–टेलीविज़न पर हिंदी में प्रसारित होने वाली औपचारिक परिचर्चाओं व भाषणों को सुनकर समझ सकें।

बच्चों की भाषा में इस बात के पर्याप्त संकेत मिलते हैं कि वे अपनी भाषा का व्याकरण अच्छी तरह जानते हैं। पर व्याकरण की सचेत समझ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को उसके विभिन्न पक्षों की पहचान विविध पाठों के संदर्भ में और आसपास के परिवेश से जोड़कर कराई जाए। व्याकरण की अवधारणाओं की अमूर्त परिभाषाएँ याद करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है उन्हें वास्तविक संदर्भों में समझना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास। प्रश्न और कक्षा में शिक्षक द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली व्यावहारिक गतिविधियाँ और युक्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। व्याकरण के पक्षों की समझ चरणबद्ध क्रम में विकसित की जा सकती है : पहला चरण पहचान का है और दूसरा चरण प्रयोग का है।

पाठ्य सामग्री

पाठ्यक्रम में कक्षानुसार व्याकरण के कुछ बिंदु दिए गए हैं। इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक निर्माता और शिक्षक पाठ में सहज रूप से उभरकर आने वाले व्याकरण संबंधी और भाषा की बारीकी व सुंदरता संबंधी अन्य पक्षों को क्रमशः समझने और सराहने में छात्र–छात्राओं की सहायता करें। एक कक्षा में चर्चित बिंदुओं की चर्चा दूसरी कक्षाओं में भी जारी रह सकती हैं। ऊपर की पंक्तियों में चर्चित उदाहरणों के अलावा कई गतिविधियों और युक्तियों को भी प्रयोग में लाया जा सकता है, जैसे– क्लोज टेस्ट, शब्द–कड़ी, अंत्याक्षरी आदि।

बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। मातृभाषा बच्चा अपने माता–पिता एवं अन्य परिजनों से सुनकर अनायास ही अनुकरण द्वारा सीख लेता है और उससे उसका सहज संबंध स्थापित हो जाता है। प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण,

उसकी रुचियों, क्षमताओं यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है। भाषा सोचने, महसूस करने और चीजों से जुड़ने का एक उत्तम साधन है। भाषा ही बच्चे को समझदार, विचारवान, सभ्य और शिक्षित बनाती है। मातृभाषा में ही बच्चे का मस्तिष्क सबसे पहले क्रियाशील होता है। अतः मातृभाषा बच्चे की पहली उपलब्धि और सहायिका है। यही कारण है कि सभी शिक्षाशास्त्री एकमत हैं कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा में संप्रेषण का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। इसके लाभ शोध द्वारा स्थापित किए जा चुके हैं।

विद्यालय बच्चों के लिए ऐसा स्थान है जो कई दृष्टियों से घर से भिन्न है। विद्यालय के अपने नियम–कायदे हैं। बच्चे कुछ घंटों के लिए अपने परिवार से दूर हो जाते हैं। परंतु बच्चे अपने साथ बहुत 13 प्रारंभिक कक्षाओं वेफ लिए पाठ्यक्रम कुछ लेकर विद्यालय आते हैं – अपनी भाषा, अपने अनुभव एवं दुनिया को देखने का अपना दृष्टिकोण आदि। इन्हीं सबका उपयोग करते हुए शिक्षक को बच्चों से आत्मीय संबंध बनाना पड़ता है ताकि विद्यालय के नवीन परिवेश में बच्चे अपनापन अनुभव करें। बच्चों के घर की भाषा और विद्यालय की भाषा के बीच के संबंध को उसकी विविधता एवं लचीलेपन के साथ देखना अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक बच्चे की भाषा अपने आप में पूर्ण होती है इसलिए उसे किसी मापदंड पर आँकना उचित नहीं है। बच्चे घर–परिवार एवं परिवेश से प्राप्त बोलचाल की भाषा के अनुभवों को लेकर ही विद्यालय आते हैं। पहली बार स्कूल में आने वाला बच्चा शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त हैं, इसलिए पने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। भाषा शिक्षण की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या जोर जबरदस्ती से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है। इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना जरूरी है जहाँ वे बिना किसी रोक–टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज–बीन कर सकें।

शिक्षण युक्तियाँ

पहली और दूसरी कक्षा में एक–एक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की जाएगी। इन पाठ्यपुस्तकों में ही पर्याप्त अभ्यास कार्य शामिल होगा। रचनाओं के चयन में इन बातों का ध्यान रखा जाएगा कि वे रोचक और बच्चों के अपने परिवेश से जुड़ी हुई हों। उनमें पर्यावरण संबंधी ज्ञान और चिंता समाहित हो। वे लिंग समानता, शांति और

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित करने वाली हों। कार्य और श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने वाली हों, और कलात्मक दृष्टि निर्मित करने और मूल्य चेतना जगाने में सहायक हों। प्राथमिक स्तर के लिए अध्यापकों को संबोधित एक पुस्तक का निर्माण भी किया जा सकता है जिसमें कक्षा में उचित वातावरण निर्माण, विभिन्न भाषायी परिवेश से आए बच्चों से सहज संबंध, विभिन्न भाषाई कौशलों का विकास, पाठ्यसामग्री के उचित उपयोग, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षण युक्तियाँ एवं दृश्य श्रव्य सामग्री के उचित उपयोग एवं मूल्यांकन आदि पर चर्चा होगी।

बच्चों को ध्यान में रखकर आवश्यक दृश्य–श्रव्य सामग्री का निर्माण किया जा सकता है।

• बच्चों की मौलिकता एवं सहज रचनाशक्ति को सामने लाने का शिक्षक का प्रयास भाषा शिक्षण की प्राथमिकता होती है।

• कक्षा में सहज आत्मीय वातावरण निर्मित करने के लिए बच्चों से उनके घर, परिवेश, पसंद–नापसंद, संगी–साथियों के बारे में बातचीत करनी चाहिए ताकि उनकी झिझक खुल सके।

• कक्षा एवं स्कूल में उपलब्ध स्थान का उपयोग अध्यापक को इस प्रकार करना चाहिए कि वह बच्चों के भाषायी विकास के अनुकूल वातावरण निर्मित कर सके।

• कक्षा में दीवारों पर बच्चों द्वारा निर्मित एवं एकत्रित चित्रों एवं रचनाओं तथा शिक्षक द्वारा एकत्रित चित्रों एवं रचनाओं को इस प्रकार लगाना चाहिए कि बच्चे उसे सरलता से देख सकें। चित्र वार्तालाप एवं लेखन की गतिविधियों के लिए उपयोगी होते हैं।

• कक्षा में भाषा की विविधता के प्रति संवेदनशील बनकर उसका उपयोग भाषा शिक्षण में करना चाहिए। मसलन– भोजपुरी, अवधी, संथाली के शब्दों, मुहावरों, अभिव्यक्तियों का खुलकर प्रयोग करने का अवसर बच्चों को मिलना चाहिए।

• शिक्षण प्रक्रिया को रुचिकर एवं वैविध्यपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण सामग्री विविध स्रोतों से एकत्रित की जानी चाहिए, जैसे– श्रव्य–दृश्य सामग्री, चार्ट, फ्लैश कार्ड्स, पत्र–पत्रिकाओं से कतरनें आदि।

• चित्र दिखाकर बच्चों से कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है।

• कहानी सुनाकर बच्चों से सुनी गई कहानी को अपने शब्दों में सुनाने के लिए कह सकते हैं।

• गीत एवं कविता की प्रस्तुति उचित लय एवं हाव–भाव के साथ होनी चाहिए।

• बच्चों में रेखांकन और चित्रांकन के माध्यम से लेखन कौशल का विकास किया जा सकता है।

• चित्र बनाकर उस चित्र के आधार पर बच्चों से चार–पाँच वाक्य लिखने को कहा जा सकता है।

• शिक्षण प्रक्रिया में समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।

• विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल किया जाए।

परीक्षामूल्यांकन

मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों की सीखने की क्षमता का आकलन करना है और सीखने की कठिनाइयों तथा बच्चों की समस्याओं को पहचानना है। विद्यार्थी विशेष की समस्या को पहचान कर उसके अनुसार शिक्षण विधि में सुधार मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण अंग है। पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों का मूल्यांकन पूर्णतया अनौपचारिक एवं अप्रत्यक्ष होना चाहिए तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत् एवं व्यापक। इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि मूल्यांकन निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और दायित्वपूर्ण हो। बच्चों की मौलिकता, कल्पनाशीलता, सृजनशीलता के आंकलन के पर्याप्त अवसर हों।

कक्षा में शिक्षक इस बात का प्रयास करें कि प्रत्येक गतिविधि में बच्चे की सहभागिता हो। जाँच की प्रक्रिया का प्रारंभ एक सतर्क अवलोकन के माध्यम से किया जाना चाहिए जिससे यह पता चल सके कि वह क्या जानते हैं और उन्हें क्या जानने की जरूरत है। शिक्षक उनकी प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण करें, केवल सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का ही नहीं।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का मूल्यांकन उनकी क्षमता और सीमाओं को ध्यान में रखकर किया जाए। इस स्तर पर किसी भी रूप में मौखिक और लिखित औपचारिक परीक्षा न ली जाए।

तीसरी कक्षा तक आते–आते बच्चे स्कूल से परिचित हो जाते हैं और वहाँ के वातावरण में घुलमिल जाते हैं। स्कूल का वातावरण और दूसरे बच्चों का साथ उन्हें हिंदी भाषा में निहित स्थानीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विविधताओं से परिचित कराता है। अतिरिक्त वे अन्य भाषाओं के प्रति संवेदनशील भी हो जाते हैं। इस स्तर पर बच्चों की भाषा से जुड़े कौशलों की प्रकृति में गुणात्मक बदलाव आएगा। उनमें स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत विकसित होगी। पढी हुई सामग्री से वे संज्ञानात्मक और भावनात्मक स्तर पर जुड़ेंगे और उसके बारे में स्वतंत्र और मौलिक विचार व्यक्त कर सकेंगे।

यहाँ तक आते–आते लिखना एक प्रक्रिया के रूप में प्रारंभ हो जाता है

और वह अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से लिखने लगते हैं।

1. बच्चों में पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत करना –
   - पाठ्यपुस्तक की विधाओं से परिचित होना और उससे प्रेरित हो कर उन विधाओं की अन्य पुस्तकें पढ़ना।
   - मुख्य बिंदु/विचार को ढूँढ़ने के लिए विषय–सामग्री की बारीकी से जाँच करना।
   - विषय सामग्री के माध्यम से नए शब्दों का अर्थ जानने की कोशिश करना।
2. पूर्व अर्जित भाषायी कौशलों का उत्तरोत्तर विकास करना
   - दूसरे के विचारों को सुनकर समझना और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकना।
   - दूसरों के विचारों को पने की योग्यता का विकास करना।
   - पठन के द्वारा ज्ञानार्जन एवं आनंद प्राप्ति में समर्थ बनाना।
   - अध्ययन की कुशलता का विकास करना।
   - स्वतंत्रता और आत्मविश्वास के साथ लिख पाना।
   - मनपसंद विषय का चुनाव कर लिख सकना।
   - विषयवस्तु और विचारों के प्रस्तुतीकरण में लेखन की तकनीक का विकास करना।
   - दूसरों की अभिव्यक्ति को सुनकर उचित गति से शब्दों एवं वाक्यों को लिख सकना।
3. भाषा को अपने परिवेश और अपने अनुभवों को समझने का माध्यम मानना और उसका सार्थक उपयोग कर सकना।
   - कक्षा में बच्चों को बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ना।

- बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता को विकसित करना।
- भाषा के सौंदर्य की सराहना करने की योग्यता का विकास करना।

प्रत्येक कक्षा (3 4 5) के लिए एक–एक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की जाएगी। इन पाठ्यपुस्तकों में ही पर्याप्त अभ्यास कार्य शामिल होगा। पुस्तकों की विषय–सामग्री उद्देश्यों और शैक्षिक क्रियाकलापों पर आधारित होगी। सामग्री का चयन कक्षा 1 और 2 में विकसित हुए भाषायी कौशल और विषयों को ध्यान में रखकर किया जाएगा। कक्षा 3 4 और 5 के बच्चों को अतिरिक्त पठन के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

कक्षा एक और दो के लिए सुझाई गई युक्तियों के साथ ही निम्नलिखित क्रियाकलापों का आयोजन भाषा शिक्षण के लिए किया जा सकता है –

- बच्चों की रुचि के अनुसार परिचित विषय या प्रसंग पर चर्चा।
- कहानी, वर्णन, विवरण आदि पर प्रश्न पूछने और उत्तर देने को प्रोत्साहित करें।
- भाषण, वाद–विवाद, कविता पाठ, अभिनय आदि का आयोजन कराया जाए।
- कहानी, नाटक के पात्रों का अभिनय कराया जाए।
- सरल एवं परिचित विषयों पर वाक्य, अनुच्छेद लेखन।
- अनुभव पर आधारित घटना का विवरण लेखन।
- अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र लेखन।
- वर्ग–पहेली भरवाना।
- चित्र दिखाकर उस पर आधारित कविता, कहानी लेखन।
- अधूरी कहानी को पूरी कर सुनाने तथा लिखने को कहा जा सकता है।
- पुस्तकालय समृद्ध करने हेतु प्रयास।

एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा सुझाई सीखने सिखाने की प्रक्रिया

कक्षा 1

संलग्नक I
एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा सुझाई सीखने सिखाने की प्रक्रिया
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत , सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाएगा ताकि उन्हें -
अपनी भाषा में अपनी बात कहने ,बातचीत करने (भाषिक और सांकेतिक मध्यम से) के लिए अवसर एवं प्रोत्साहन हों
बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों । इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर भी मिल सकेंगे ।
कहानी, कविता आदि को बोलकर सुनने के अवसर हों और उस पर बातचीत करने के अवसर हों
हिंदी में सुने गीत, बात, कविता, खेल गीत, कहानी आदि को अपने तरीक़े और अपनी भाषा में कहने सुनने के अवसर उपलब्ध हों
प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों
कक्षा अथवा विद्यालय (पढ़ने का कोना/पुस्तकालय) में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की एवं विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/ऐं, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री ब्रेल में उपलब्ध हो । कमजोर दृष्टि वाले बच्चों को ध्यान में रखते हुए कुछ सामग्री बड़े अक्षरों में भी छपी हुई हो
तरह तरह की कहानियों, कविताओं को चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों
विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, कहानी में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, उसे अनुभव संसार से जोड़कर देख पाना आदि
सुनी, देखी, बातों को अपने तरीक़े से काग़ज़ पर उतरने के अवसर हों
बच्चे अक्षरों की आकृति बनाना शुरू करते हैं भले ही उनके द्वारा बनाए गए अक्षरों में सगढता न हो - इसे कक्षा में स्वीकार किया जाए
बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए

संलग्नक II
मन - मानचित्रण(मैपिंग) कक्षा 1 हिन्दी विषय सी. बी. एस. सी. द्वारा अपनाए - सीखने के प्रतिफल के साथ
विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे - कविता कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना ।
सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं प्रश्न पूछते हैं ।
भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनंद लेते हैं, जैसे - इन्ना, बिन्ना, तिन्ना ।
प्रिंट (लिखा या छापा हुआ) और गैर -प्रिंट सामग्री (जैसे चित्र या अन्य ग्राफ़िक्स) में अंतर करते हैं ।
चित्र के सूक्ष्म और प्रत्येक पहलुओं का बारीक अवलोकन करते हैं ।
चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घटी अलग-अलग घटनाओं,गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं ।
पढ़ी कहानी, कविताओं आदि में लिपि चिन्हों/शब्दों/वाक्यों आदि को देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं ।
संदर्भ की मदद से आस-पास मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देश्य का अनुमान लगते हैं, जैसे - टॉफ़ी के कवर पर लिखे नाम को 'टॉफ़ी ', 'लॉलीपॉप' या 'चोक्लेट ' बताना ।
प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों को पहचानते हैं, जैसे - 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, यह कहाँ लिखा हुआ है?/ इसमें 'नाम' कहाँ लिखा हुआ है?/ 'नाम' में - 'म' पर ऊँगली रखो।
परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री (जैसे - मिड डे मील का चार्ट , अपना नाम, कक्षा का नाम, मनपसंद किताब का शीर्षक आदि) में रूचि लेते हैं, बातचीत करते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे - केवल चित्रों या चित्रों और प्रिंट की मदद ठीक अनुमान लगाना, अक्षर-ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना ,पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना ।
हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं ।
स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं
लिखना सिखाने की प्रक्रिया के दौरान अपने विकासात्मक स्तर के अनुसार चित्रों, आड़ी - तिरछी रेखाओं (किरम काटी) , अक्षर आकृतियों , स्व - नियंत्रित लेखन (कन्वेन्शनल राइटिंग) के माध्यम से सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीक़े से लिखने का प्रयास करते हैं

संलग्नक ।
एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा सुझाई सीखने सिखाने की प्रक्रिया
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत , सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाएगा ताकि उन्हें
अपनी भाषा में अपनी बात कहने ,बातचीत करने की भरपूर आज़ादी और अवसर हों ।
हिंदी में सुनी गीत बात, कविता, खेल गीत, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने सुनने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों
बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों । इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे ।
'पढ़ने का कोना 'में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की और विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/ऍं, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री, जैसे - बाल साहित्य बाल पत्रिकाएँ , पोस्टर, ऑडीओ-विडीओ सामग्री उपलब्ध हो ।
कहानी, कविता आदि को बोलकर सुनने के अवसर हों और उस पर बातचीत करने के अवसर हों ।
चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर तरह तरह की कहानियों कविताओं को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों ।
विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे किसी कहानी में घटी किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, कहानी में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, किसी घटना के होने के लिए तर्क दे पाना, पात्र के संबंध में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, किसी घटना के होने के लिए तर्क दे पाना, पात्र के सम्बन्ध में अपनी पसंद या नापसंद के बारे में बात पाना आदि ।
कहानी, कविता आदि को बोलकर, पढ़कर सुनाने के अवसर हों और उस पर बातचीत करने के अवसर हों
सुनी, देखी, बातों को अपने तरीके से कागज़ पर उतरने के अवसर हों । ये चित्र भी हो सकते हैं, शब्द भी और वाक्य भी
बच्चे अक्षरों की आकृति बनाने में अपेक्षाकृत सगढता का प्रदर्शन करते हैं । इसे कक्षा में प्रोत्साहित किया जाए ।
बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढने की प्रवृति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए ।

संदर्भ द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए

संलग्नक II
मन - मान चित्रण(मैपिंग) कक्षा 2 हिन्दी विषय सी. बी. एस. सी. द्वारा अपनाए - सीखने के प्रतिफल के साथ
विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे - जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि ।
कही जा रही बात, कहानी कविता आदि ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते सुनाते हैं ।
देखी सुनी बातों कहानी कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं
अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनाई जा रही सामग्री जैसे - कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं
भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनंद लेते हैं, जैसे - एक था पहाड़, उसका भाई था दहाड़, दोनो गये खेलने इत्यादि ।
अपनी कल्पना से कहानी , कविता आदि कहते/सुनते हैं/आगे बढ़ते हैं ।
अपने स्तर और पसंद के अनुसार कहानी, कविता, चित्र पोस्टर आदि को आनंद के साथ पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं ।
चित्र के सूक्ष्म और प्रत्येक पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं ।
चित्र में या क्रमवार सजीव चित्रों में घटी अलग अलग घटनाओं गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र को देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं ।
परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रूचि देखते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं जैसे - चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर ध्वनि सम्बन्ध का इस्तेमाल करना शब्दों को पहचानना पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना करते हुए अनुमान लगाना ।
प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा को समझते हैं, जैसे- 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं?/ 'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन कौन से अक्षर हैं
हिंदी की वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं ।
स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं
स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत चित्रों आड़ी -तिरछी रेखाओं (कीरम -कॉटे), अक्षर आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व-वर्तनी का उपयोग और स्व-नियंत्रण लेखन (कोनवेंशनल राइटिंग) करते हैं ।
सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह तरह से चित्रों/शब्दों/वाक्यों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं ।
अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं ।
अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि आगे बढ़ाते हैं ।

कक्षा 3

संलग्नक ।
एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा सुझाई सीखने सिखाने की प्रक्रिया
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत , सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाएगा ताकि उन्हें
अपनी भाषा में अपनी बात कहने ,बातचीत करने की भरपूर आज़ादी और अवसर हों ।
हिंदी में सुने गीत बात, कविता, खेल गीत, कहानी आदि को अपने तरीक़े और अपनी भाषा में कहने सुनने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों
बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों । इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे ।
'पढ़ने का कोना 'में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की और विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/ऐं, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री, जैसे - बाल साहित्य बाल पत्रिकाएँ , पोस्टर, ऑडीओ-विडीओ सामग्री उपलब्ध हो ।
तरह तरह की कहानियों कविताओं पोस्टर आदि को चित्रों और संदर्भ के आधार पर समझने समझाने के अवसर उपलब्ध हों
विभिन्न उदयेशों को ध्यान में रखते हुए पड़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे किसी कहानी में घटी किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, कहानी में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, किसी घटना के होने के लिए तर्क दे पाना, पात्र के संबंध में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, किसी घटना के होने के लिए तर्क दे पाना, पात्र के सम्बन्ध में अपनी पसंद या नापसंद के बारे में बात पाना आदि ।
सुनी, देखी, बातों को अपने तरीक़े से काग़ज़ पर उतरने के अवसर हों । ये चित्र भी हो सकते हैं, शब्द भी और वाक्य भी
अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य//अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों ।
संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हों
अपना परिवार, विद्यालय, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव की चौपाल जैसे विषयों पर अथवा स्वयं विषय का चुनाव कर अनुभवों को लेकर एक दूसरे से बाँटने के अवसर हों

एक दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उन पर अपनी राय देने, उनमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग अलग ढंग से लिखने के अवसर हों

संलग्नक II
मन - मान चित्रण (मैपिंग) कक्षा 3 हिन्दी विषय सी. बी. एस. सी. द्वारा अपनाए - सीखने के प्रतिफल के साथ
कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं
कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही प्रकार से सुनते हैं ।
सुनी हुई रचनाओं की विषय वस्तु घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, राय बताते हैं/अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं ।
आस पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभवों के बारे में बताते,बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं।
कहानी,कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी /बात जोड़ते हैं ।
तरह -तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार,बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक, सांकेतिक) देते हैं ।
अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक, सांकेतिक) देते हैं।
अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं ।
तरह-तरह की कहानियों, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे -शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिह्नों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग करते हैं।
अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं।
स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत चित्रों आड़ी -तिरछी रेखाओं (कीरम - कांटे), अक्षर आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व-वर्तनी का उपयोग और स्व-नियंत्रण लेखन (कनवेंशनल राइटिंग) करते हैं ।
विभिन्न उद्देश्यों के लिये लिखते हुए अपने लेखन में विराम चिन्हों, जैसे पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिन्ह का सही इस्तेमाल करते हैं ।

कक्षा 4

संलग्नक ।
एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा सुझाई सीखने सिखाने की प्रक्रिया
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत , सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाएगा ताकि उन्हें
विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं म अनुभवों, कहानियों कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने सुनने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों ।
'पढ़ने का कोना 'में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की और विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/ऐं, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री, जैसे - बाल साहित्य बाल पत्रिकाएँ , पोस्टर, ऑडीओ-विडीओ सामग्री उपलब्ध हो ।
तरह तरह की कहानियों कविताओं पोस्टर आदि को चित्रों और संदर्भ के आधार पर समझने समझाने के अवसर उपलब्ध हों
सुनी, देखी, बातों को अपने तरीक़े से काग़ज़ पर उतरने के अवसर हों । ये चित्र भी हो सकते हैं, शब्द भी और वाक्य भी
अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य//अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों ।
अपना परिवार, विद्यालय, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव की चौपाल जैसे विषयों पर अथवा स्वयं विषय का चुनाव कर अनुभवों को लेकर एक दूसरे से बाँटने के अवसर हों
एक दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उन पर अपनी राय देने, उनमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग अलग ढंग से लिखने के अवसर हों
विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे किसी कहानी या पात्रों के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया, राय, तर्क देना, विश्लेषण करना आदि ।
कहानी, कविता आदि को बोलकर पढ़ने सुनने और सुनी देखी पढ़ी घटनाओं को अपने तरीक़े से, अपनी भाषा में कहने और लिखने (भाषिक और सांकेतिक माध्यम से) के अवसर एवं प्रोत्साहन उपलब्ध हों ।
ज़रूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नये शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर उपलब्ध हों ।
एक दूसरे को लिखी हुई रचनाओं को सुनने पढ़ने और उस पर अपने राय देने उसमें अपने बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग अलग ढंग से लिखने के अवसर हों ।
अपनी बात को अपने ढंग से सृजनात्मक तरीके से अभिव्यक्त (मौखिक, लिखित, सांकेतिक रूप से) करने की आज़ादी हो ।

आस पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं (जैसे - मेरे घर की चैट से सूरज क्यों नहीं दिखता? सामने वाले पेड़ पर बैठने वाली चिड़ियाँ कहाँ चली गयीं?) को लेकर प्रश्न करने, सहपाठियों से बातचीत या चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।
कक्षा में अपने साथियों को भाषाओं पर गौर करने के अवसर हों जैसे - आम, रोटी, तोता आदि शब्दों को अपनी अपनी भाषा में कहे जाने के अवसर उपलब्ध हों ।
विषय वस्तु के संदर्भ में भाषा को बारीकियों और उसकी नियमबद्ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों ।
अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे - गणित, विज्ञान,सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों ।

संलग्नक II
मन - मानचित्रण(मैपिंग) कक्षा 4 हिन्दी विषय सी. बी. एस. सी. द्वारा अपनाए - सीखने के प्रतिफल के साथ
दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं ।
सुनी हुई रचनाओं की विषय वस्तु घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, राय बताते हैं/अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं ।
कहानी,कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी /बात जोड़ते हैं ।
भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते और उसका इस्तेमाल करते हैं ।
तरह -तरह की रचनाओं/सामग्री (अख़बार,बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक, सांकेतिक) देते हैं ।
विविध प्रकार की सामग्री (जैसे - समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक बाल पत्रिका आदि(में आए प्राकृतिक सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिंदुओं को समझते और उन पर चर्चा करते हैं ।
पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनुभवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी संवेदनाओं और विचारों की (मौखिक / लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं ।
अलग अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अख़बार, बाल पत्रिका, जैसे पूर्ण विराम, अल्प विराम प्रश्नवाचक चिन्ह का सचेत इस्तेमाल करते हैं ।
पढने के प्रति उत्सुक रहते हैं और पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं ।

पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं ।
स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे - गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन , नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली की सराहना करते हैं ।
भाषा की बारीकियों , जैसे - शब्दों की पुनरावृति, सर्वनाम विशेषण, जेंडर, वचन आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं ।
किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए सराहते हैं और शब्दों का उचित प्रयोग करते हुए लिखते है ।
विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन बोर्ड पर लगाई जाने वाली सूचना, सामान की सूची, कविता, कहानी, चिट्ठी आदि) के अनुसार लिखते हैं ।
स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधियों के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं ।
अलग अलग तरह की रचनाओं में आए ने शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं ।
विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम - चिन्हों, जैसे - पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिन्ह का सचेत इस्तेमाल करते हैं ।
अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्ण आदि लिखते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं ।

संलग्नक । एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा सुझाई सीखने सिखाने की प्रक्रिया
एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा सुझाई सीखने सिखाने की प्रक्रिया
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत , सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाएगा ताकि उन्हें
विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं में अनुभवों, कहानियों कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने सुनने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों ।
पुस्तकालय/कक्षा में अलग अलग तरह की कहानियाँ, कविताएं अथवा/बाल साहित्य, स्तरानुसार सामग्री, साइन-बोर्ड होर्डिंग अख़बारों की कतरने उनके आस पास के परिवेश में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौक़े हो ।
तरह तरह की कहानियों कविताओं पोस्टर आदि को चित्रों और संदर्भ के आधार पर समझने समझाने के अवसर उपलब्ध हों
सुनी, देखी, बातों को अपने तरीके से कागज़ पर उतरने के अवसर हों । ये चित्र भी हो सकते हैं, शब्द भी और वाक्य भी
ज़रूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (ने शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर उपलब्ध हों ।
एक दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उन पर अपनी राय देने, उनमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग अलग ढंग से लिखने के अवसर हों
आस पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं (जैसे - मेरे घर की चैट से सूरज क्यों नहीं दिखता? सामने वाले पेड़ पर बैठने वाली चिड़ियाँ कहाँ चली गई ?) को लेकर प्रश्न करने, सहपाठियों से बातचीत या चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।
विषय वस्तु के संदर्भ में भाषा को बारीकियों और उसकी नियम्बद्ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों ।
नए शब्दों को चित्र शब्दकोश/शब्दकोश में देखने के अवसर उपलब्ध हों ।
अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे - गणित, विज्ञान,सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों ।
पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।

संलग्नक II
मन - मानचित्रण(मैपिंग) कक्षा 5 हिन्दी विषय सी. बी. एस. सी. द्वारा अपनाए - सीखने के प्रतिफल के साथ
सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषय-वस्तु घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं ।
अपने आस पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर मौखित रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं ।
भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते और उसका इस्तेमाल करते हैं ।
विविध प्रकार की सामग्री (जैसे - समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक बाल पत्रिका, पोस्टर आदि) में आए संवेदनशील बिंदुओं पर (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं, जैसे - 'ईदगाह कहानी पढ़ने के बाद बच्चा कहता है - मैं भी अपनी दादी की खाना बनाने में मदद करता हूँ ।
विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ते और लिखते हैं ।
अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (अख़बार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझते हुए पढ़ते और उसके बारे में बताते हैं ।
सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य साहसिक सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषय वस्तु घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/ प्रश्न पूछते हैं/ अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।
अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं ।
स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन को जाँचते हैं और उसमें बदलाव करते हैं, जैसे - किसी घटना की जानकारी के बारे में बताने के लिए स्कूल की भिति पत्रिका के लिए लिखना और किसी दोस्त को पत्र लिखना ।
भाषा की बारीकियों, जैसे - शब्दों की पुनरावृत्ति, सर्वनाम विशेषण, जेंडर, वचन आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं ।
भाषा की व्याकरणिक इकाइयों (जैसे - कारक चिन्ह, क्रिया, काल, विलोम आदि) की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं ।
विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम चिन्ह, जैसे - पूर्ण विराम, अलोप विराम, प्रश्नवाचक चिन्ह, उद्धरण चिन्ह का सचेत इस्तेमाल करते हैं ।

स्तरानुसार अन्य विषयों व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझते हैं और संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं ।
अपने आस पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर लिखित रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं ।
उद्देश्य और संदर्भ के अनुसार शब्दों, वाक्यों, विराम - चिन्हों का उचित प्रयोग करते हुए लिखित हैं ।
पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिंदुओं पर लिखित/ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं ।
अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्ण आदि लिखते हैं। कविता कहानी को आगे बढ़ते हुए लिखते हैं ।

Hindi Primary progression

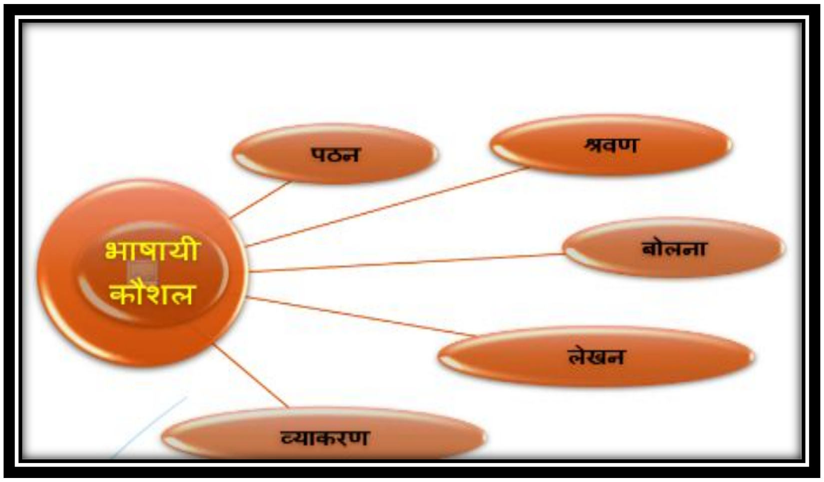

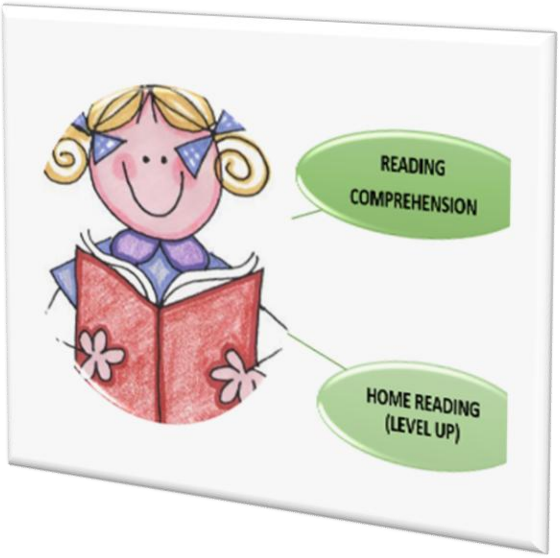

	GRADE 1	GRADE 2	GRADE 3	GRADE 4	GRADE 5
पठन Reading	✓स्वर और व्यंजन की भली भांति पहचान कर सकेंगे ।	➢अध्यापिका द्वारा मात्रा का सही ज्ञान प्राप्त करके छात्र कक्षा में पाठ पढ़ने में सक्षम होंगे।	❖विद्यार्थी सरल अनुच्छेद , अपठित गद्यांश पढ़ने तथा उसे समझकर उत्तर देने में योग्य हो सकेंगे।	❖पाठ्य पुस्तक की कविताएँ, पाठ, अनुच्छेद आदि उचित विराम चिह्नों के नियमों के अनुसार पढ़ने में सक्षम होंगी।	❖पाठ्य पुस्तक की कविताएँ, पाठ, अनुच्छेद, अपठित गद्यांशए पठित गद्यांश और कहानी आदि उचित विराम चिह्नों के नियमों के अनुसार पढ़ने में सक्षम होंगी।
	✓किसी भी वस्तु तथा शब्दों की आरंभिक ध्वनि को समझकर बोल सकेंगे।	➢छात्र प्रतिदिन उपयोग होने वाली वस्तुओं को देखकर उनका सही उच्चारण कर नए शब्दों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।	पाठ्य पुस्तिका के पाठ तथा कविता को भावों और तालमेल के साथ पढ़ने में सक्षम होंगे।	❖सड़क पर दिए गए बोर्ड संकेत, छोटी रोचक कहानियाँ आदि पढ़ने में समर्थ होंगी।	❖सड़क पर दिए गए बोर्ड संकेत ,समाचार पत्र, पत्रिकाएँआदि पढ़ने में समर्थ होंगी।
	✓शब्दों के साथ चित्रों का मिलान करने योग्य हो सकेंगे।	छात्र शब्दों और पदों को प्रवाह के साथ पढ़ सकेंगे।	छात्र वाक्य पढ़ने में सक्षम होंगे।	वे पठित और अपठित गद्यांश पढ़कर उत्तर दे सकेंगी।	वे पठित और अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगी।
	✓अमात्रिक शब्द तथा वाक्य पढ़ने में सक्षम हो सकेंगे।	सरल शब्दों और वाक्यों को अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ सकेंगे।			
	✓दिए गए व्यंजन से शब्द पढ़ने का प्रयास करेंगे।				
	शब्दों की सहायता से छात्र अक्षर की ध्वनि समझने मे सक्षम होंगे।				

Page 1

	GRADE 1	GRADE 2	GRADE 3	GRADE 4	GRADE 5
श्रवण Listening	✓स्वर तथा व्यंजन की ध्वनियों का सही उच्चारण कर सकेंगे।	➢छात्र कहानियाँ सुनकर तथा प्रश्नों के मौखिक उत्तर दे सकेंगे।	• छात्र कहानियों पर आधारित बहुविकल्पक प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।	• छात्र कहानियों पर आधारित बहुविकल्पक प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।	• छात्र कहानियों पर आधारित बहुविकल्पक प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे और पात्रों पर चर्चा कर सकेंगे।
	✓नए शब्दों की पुनरावृत्ति कर सकेंगे।	➢अध्यापिका द्वारा छात्रों को सही मात्राओं का ज्ञान होने से नए शब्दों का सही उच्चारण कर आपस में वार्तालाप करने में सक्षम होंगे।	• बच्चे अध्यापिका द्वारा सुनाई गई पौराणिक कहानियों पर तथा कहानी के प्रमुख पात्रों पर भी चर्चा कर सकेंगे।	❖कहानियाँ सुनकर उनका सारांश बता सकेंगी।	❖कहानियाँ सुनकर उनका सारांश और उनका शीर्षक और सीख के बारे में बता सकेंगी।
	✓रंगों, जानवरों , फलों, सब्जियों आदि पर आधारित छोटी कविताएँ, कहानियाँ सुनाई जाएँगी ।	✓रंगों, जानवरों , फलों, सब्जियों आदि पर आधारित छोटी कविताएँ, कहानियों के प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगे।	❖कहानियाँ सुनकर उनका शुद्ध उच्चारण और वाचन कर सकेंगी।	❖देश भक्ति की कविताएँ और कहानियाँ सुनकर उनका वाचन प्रभावशाली वाक्यों में कर सकेंगे।	❖ तेनालीराम के किस्से, बीरबल के किस्से आदि कहानियाँ छात्राओं को सुनाई जाएँगी। कक्षा में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगी।

	GRADE 1	GRADE 2	GRADE 3	GRADE 4	GRADE 5
बोलना SPEAKING	✓स्वर्णिम शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने का प्रयास करेंगे।	➢अध्यापिका द्वारा दिए गए विषय के आधार पर पाँच वाक्य बोलने में छात्र समक्ष होंगे। जैसे – मेरा विद्यालय,मेरा परिवार, पेड़ और जल आदि।	•बच्चे कविता का उचित लय से वाचन करने में सक्षम होंगे।	❖छात्राएँ कहानियाँ सुनकर उनके प्रश्नों के उत्तर हिन्दी भाषा में देने योग्य होंगी।	❖छात्राएँ कहानियाँ सुनकर उन्हें अपने शब्दों में बोलने के योग्य होंगी।
	✓सामान्य अभिवादन वाले शब्द विनम्र अभिव्यक्ति के साथ बोल सकेंगे।	➢छात्र अपना परिचय स्वयं दे सकेंगे।	विद्यार्थी सरल विषय जैसे मेरा परिवार, दुबई मेला, पालतू जानवर जैसे ऊँट, बकरी, गाय आदि पर कम से कम पाँच वाक्य बोलने योग्य होंगे।	➢छात्र प्रतिदिन की दिनचर्या जैसे सैर करना , व्यायाम करने आदि कामों के बारे में चर्चा करने में सक्षम हो सकेंगे।	दिए गए विषयों के आधार पर कम से कम पाँच से आठ वाक्य बोल सकेंगी। जैसे नीम का पेड़, मेरा प्रिय दोस्त, जब मैंने पहली मैगी बनाई और मेरी स्कूल बस आदि।
	✓अपना परिचय छोटे और सरल वाक्यों में देने योग्य होंगे।	➢छात्र आसपास की प्रत्येक वस्तु का अनुभव कर अपने विचारों का व्यक्त करने में सक्षम हो सकेंगे।	•छात्र व्याकरण के विषय जैसे संज्ञा , सर्वनाम , विशेषण , लिंग , वचन आदि शब्दों की पहचान करके बोलचाल की भाषा में उनका उचित प्रयोग कर सकेंगे।	दिए गए विषयों के आधार पर कम से कम पाँच से आठ वाक्य बोल सकेंगी। जैसे कि समय का महत्तव, अगर मैं परी होती आदि।	• बच्चे महान नेताओं, त्योहारों तथा सुंदर दृश्यों के चित्र देखकर कम से कम चार –पाँच वाक्य बोल सकेंगे। छात्र संयुक्त अरब इमारात के राष्ट्रीय चिन्हों के विषय में चर्चा करेंगे।

Page 2

	GRADE 1	GRADE 2	GRADE 3	GRADE 4	GRADE 5
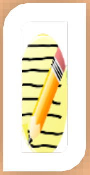 लेखन WRITING	✓पेंसिल की सहज और कुशल पकड़ का प्रयोग कर सही गठन के साथ शब्द तथा अक्षर लिखने का प्रयास करेंगे।	➤छात्र स्वर और व्यंजन क्रमबद्ध रूप से लिखेंगे।	• छात्र सरल तथा दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले शब्दों द्वारा वाक्य बनाना सीखेंगे।	❖ पाठ्य पुस्तक के प्रश्नों के उत्तर एवं अभ्यास कार्य कर सकेंगी।	❖ पाठ्य पुस्तक के लघु और दीर्घ प्रश्नों के उत्तर एवं अभ्यास कार्य कर सकेंगी।
	✓छात्र स्वतंत्र रूप से, स्वर और व्यंजन अमात्रिक शब्द दो तीन और चार वर्ण वाले शब्द लिख सकेंगे।	➤व्यंजनों के साथ स्वरों की सही मात्रा का शब्द लिखने में सक्षम होंगे तथा उनसे वाक्य बना सकेंगे।	• दिए गए शब्दों को देखकर तुकांत शब्द बनाना और लिखना सीखेंगे।	वर्ग पहेलियाँ, शब्दों को जोड़कर नए शब्द बनाना, वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखने में सक्षम होंगे।	वर्ग पहेलियाँ, गद्यांश और चित्र वर्णन करने में सक्षम होंगे।
	✓छात्र एक से बीस तक की गिनती अंकों में लिख सकेंगे।	छात्र मात्राओं का उच्चारण सुनकर श्रुतलेख लिखेंगे। शरीर के अंगों के नाम लिखने, रंगों के , जानवरों के और फलों के नाम लिख सकेंगे।	• अपठित गद्यांश पढ़कर बहुविकल्पिक प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगे।	❖छात्राएँ चित्र तथा कहानियों के चल चित्र को देखकर वाक्य लिख सकेंगी। अपठित गद्यांश तथा पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगे।	❖छात्र चित्र तथा दिए गए विषय पर अनुच्छेद, पत्र लिख सकेंगी।

	GRADE 1	GRADE 2	GRADE 3	GRADE 4	GRADE 5
		चित्र वर्णन – मौखिक	चित्र वर्णन	चित्र वर्णन	चित्र वर्णन
		अपठित गद्यांश – मौखिक	अपठित गद्यांश	अपठित गद्यांश	अपठित गद्यांश
			अनुच्छेद– – हमारे त्योहार –यदि हम गुम हो जाए तो क्या करेंगे ? – मौसम	अनुच्छेद –अगर मै परी होती, समय का महत्तव आदि।	अनुच्छेद –नीम का पेड़, मेरा प्रिय दोस्त, जब मैंने पहली मैगी बनाई और मेरी स्कूल बस आदि।
			संज्ञा शब्द – व्यक्तिवाचक और जातिवाचक भेद रेखांकित करना, वाक्यों में संज्ञा शब्द भरना, संज्ञा शब्दों के चित्र बनाना आदि।	संज्ञा – व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञा वर्णविच्छेद	संज्ञा – व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञा वर्णविच्छेद , सर्वनाम – सारे भेद भेद
			लिंग– स्त्रीलिंग, पुल्लिंग वचन – एकवचन , बहुवचन	सर्वनाम –पुरुषवाचक	सर्वनाम –पुरुषवाचक ,निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक
			क्रिया और उसकी पहचान करना। विशेषण – विशेषण शब्दों से खाली स्थानों को भरना, वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखना, विलोम शब्द – पाठ के आधार पर	लिंग– स्त्रीलिंग, पुल्लिंग वचन – एकवचन , बहुवचन	लिंग– स्त्रीलिंग, पुल्लिंग वचन – एकवचन , बहुवचन
				विशेषण – गुणवाचक, संख्यावाचक –बुर्ज खलीफा की तीन विशेषताएँ लिखना।	विशेषण – गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक विशेषण
GRAMMAR व्याकरण				– यू. ए. ई के बारे में पाँच विशेषण शब्द लिखकर, किन्ही तीन विशेषणों को वाक्यों में प्रयोग करना।	यू. ए. ई से संबंधित विषयों जैसे मेट्रो में मेरी प्रथम यात्रा आदि पर अनुच्छेद लिखने में सक्षम होंगी।

Page 3

	-				काल और उसके भेद
			चित्र वर्णन, अनुच्छेद लेखन	पर्यायवाची शब्द	पर्यायवाची शब्द
				विलोम शब्द, अनेकार्थी शब्द	विलोम शब्द , पर्यायवाची शब्द
				पत्र परिचय	पत्र लेखन– अनौपचारिक विषयों पर पत्र लिखने में सक्षम होंगी।
					क्रिया – अकर्मक , सकर्मक , प्रेरणार्थक
					र के रूप
					विराम चिह्न – पूर्ण विराम, अल्प विराम , प्रश्नसूचक, विस्मयादि बोधक, योजक, लाघव

Page 4

कक्षा-1	**पाठ्य पुस्तक**	**सुनहरी धूप -प्रवेशिका** **The step by step Series -Grade-1**
कक्षा-2	**पाठ्य पुस्तक**	**सुनहरी धूप - भाग-1**
कक्षा-3	**पाठ्य पुस्तक**	**सोन चिरैया- भाग-3**
	व्याकरण	**स्पर्श , भाग-3**
कक्षा-4	**पाठ्य पुस्तक**	**सोन चिरैया- भाग-4**
	व्याकरण	**स्पर्श , भाग-4**
कक्षा -5	**पाठ्य पुस्तक**	**सोन चिरैया- भाग-5**
	व्याकरण	**व्याकरण निधि भाग-5**